JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में महिलाओं की वर्तमान स्थिति और तदनुरूप उनके पाल्य बालक–बालिकाओं के विकास की सम्भावनाएँ

सौम्या सोनकर, हिना सोनकर तथा ममता गुप्ता

जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)

शोध सारांश

मानवता के विकास–क्रम में समाज और व्यक्ति ने बहुत लम्बी यात्रा कर ली है संग्राहक से उत्पादक तक की इस यात्रा ने समाज–व्यवस्था को कई स्तरों पर जटिलतर बनाया है। 'व्यक्ति' की स्वतन्त्रता के लिए ही ये सारे उपक्रम किये जाते रहे हैं और यह विकास यात्रा निरन्तर गतिमान है। आज संग्राहक स्तर की चुनौतियों और बन्धन से समाज पूरी तरह स्वतन्त्र हो गया है, परन्तु अभी भी विकास गति स्वतन्त्रता की हर सम्भव आयाम को हॉसिल करना चाहती है। समाज में पुरुषों के साथ साथ स्त्री भी इसी विकास–क्रम में अपना व्यक्तित्व हॉसिल कर रहीं है। आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होकर वह सामाजिक, धार्मिक, व्यवसायिक और राजनीतिक जीवन में भी सुदर्शन कीर्तिमान बना रही है। आज परिवार संस्था इन परिवर्तनों के आलोक में पुनः परिभाषित हो रही है। स्त्री के व्यक्तित्व के ये बदलाव पाल्य शिशु के सर्वांगीण विकास को भी बहुआयामी तौर पर प्रभावित कर रहे हैं।

की वर्ड / सारगर्भित शब्द– परिवार संस्था की पुनः परिभाषा, मूल्य परिवर्तन, स्त्री व्यक्तित्व के विविध आयाम एवं स्त्री जीवन के विविध आयाम के आलोक में पाल्य शिशुओं का व्यक्तित्व

प्रस्तावना :–

मध्यकाल में सामाजिक कुप्रथाऐं महिलाओं के आगे बढ़ने में बाधक बनी तो ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय महिलाओं में आजादी प्राप्त करने के लिये पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लडाइयाँ लड़ी। देश की आजादी के बाद एक बार फिर महिलाओं ने अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज करानी शुरू करा दी। शिक्षा की मशाल ने महिलाओं के जीवन में रोशनी भरनी शुरू कर दी तो महिलाओं ने अपनी चमक से पूरी दुनियाँ को निशाना बनाना शुरू कर दिया। विभिन्न सामाजिक–पारिवारिक पृष्ठभूमि से महिलाओं ने आगे बढ़कर अवसरों को चुना और चुनौतियों को स्वीकार कर हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

आज इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, किरन बेदी सहित हजारों महिलाऐं ऐसी हैं, जिन्होंने दुनियाँ को दिखाया है कि महिलाऐं किसी भी कार्य को कर सकती हैं और बुलन्दी पर पहुँच सकती है। आज शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, तकनीकी, राजनीति, मीडिया, सर्विस सेन्टर, उच्च संवैधानिक पदों, शैक्षिक क्षेत्रों, समाजसेवी संस्थाओं, लघु उद्योगों के क्षेत्र में महिलाऐं न सिर्फ अपनी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है बल्कि उच्च पदों पर आसीन देश की आधी आबादी के स्वप्न को साकार करने में जुटी है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :–

उपभोक्ता संस्कृति ने हमारी चेतना को इतना निस्तेज व निष्प्रभाव कर दिया है कि आज अच्छे और बुरे का भेद तो छोड़िये, जिसे हम ठीक समझते हैं, उसे करते हुए कतराते हैं और जिसे हम हेय समझते हैं, उसे बड़ी सरलता से बिना किसी आत्मग्लानी के करते जाते हैं। आज श्रेष्ठता का स्थान उपयोगिता ने ले लिया है।

आज देश की इस नवीन संस्कृति ने चिन्तन और कर्म में, दूसरे शब्दों में कहे तो कथनी और करनी के बीच एक चौड़ी खाई उत्पन्न कर दी है। विज्ञान के विकास से उत्पन्न आपाधापी में जीवन के शाश्वत मूल्य धूमिल हो गये हैं, अभिरूचियों एवं अभिवृत्तियों में विशेष अन्तर आया है, जहाँ पहले लोग भारत तथा भारतीयता पर गर्व करते थे, वहीं आज लोग इन दोनों से दूर भागते नजर आ रहे हैं, उनकी अभिरूचि अब पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति में है और वहीं उनकी अभिवृति भी बनती जा रही है अर्थात् आज की युवा पीढ़ी में नकारात्मक अभिवृत्तियों का विकास हो रहा है। संक्षेप में कहें तो लोभ की पराकाष्ठा, पद और धन की लिप्सा, शक्तिलोलुपता, अहंकार, स्वार्थपरता, विश्वासघात, धोखाधड़ी, छलपूर्ण व्यवहार, असत्यता, निष्ठाहीनता, निर्दयता, अन्याय, कर्तवयहीनता, ईर्ष्या आदि प्रावृत्तियों ने भारतीय समाज को ग्रसित कर लिया है। ऐसी विषम परिस्थितियों में राष्ट्र में शाश्वत जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करना, युवाओं में भारत तथा भारतीयता को समण्ने में रूचि जाग्रह तथा धनात्मक अभिवृत्तियों का विकास करना आवश्यक हो गया है।

समस्या कथन :– ***सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में महिलाओं की वर्तमान स्थिति और तदनुरूप उनके पाल्य बालक–बालिकाओं के विकास की सम्भावनाएँ***

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा :–

मूल्य– व्यक्ति का वह गुण जिसके कारण उसका महत्व, सम्मान या उपयोग समझा जाता है, मूल्य कहलाता है।

महिलायें– प्रस्तुत अध्ययन में उन महिलाओं को लिया गया है जिन्होंने कम से कम स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की है और वे भिन्न–भिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न है।

बालक–बालिका– प्रस्तुत अध्ययन में उन बच्चों को लिया गया है जिनका पालन–पोषण करने वाली उनकी मातायें स्नातक स्तर की हों।

अध्ययन के चर :– प्रस्तुत अध्ययन के चर निम्नलिखित हैं–

- **स्वतन्त्र चर–** स्नातक स्तर की महिलाऐं जो विभिन्न दैनिक गतिविधियों में संलग्न हैं।
- **परतंत्र चर–** सैद्धान्तिक मूल्य।
- **नियंत्रित चर–** भौगोलिक क्षेत्र।

अध्ययन का उद्देश्य :–

महिलाओं की विभिन्न दैनिक गतिविधियों के सन्दर्भ में उनके बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

(अ) विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन :–

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जनपद के उन बालक–बालिकाओं को लिया गया है जिनकी मातायें स्नातक स्तर की हैं।

अध्ययन विधि :– प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि से किया गया है।

न्यादर्श :–

न्यादर्श के रूप में 400 विद्यार्थियों (200 छात्रों एवं 200 छात्राओं) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना नं0–1 (अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।''

उपरोक्त परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु विभिन्न दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना की गई है। जिसे सारणी नं0–01 से सारणी नं0–06 तक में दर्शाया गया है।

उक्त परिकल्पना नं0– (अ) का परीक्षण करने हेतु, समूह गृहणी–अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता जानने के लिए उनके मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' value की गणना की गई है जिसे सारणी नं0 01 द्वारा दर्शाया गया है।

सारणी नं0–01

गृहणी तथा अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती हुई सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1 2	गृहणी अध्यापिका	50 50	43.58 52.36	8.78	4.27 6.10	8.34	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है

सारणी नं0–01 के अनुसार गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 43.58 और मानक विचलन 4.27 है तथा अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 52.36 तथा मानक विचलन 6.10 है दोनों समूहों के मध्यमान के बीच अन्तर 8.78 है। 't' value calculate करने पर मान 8.34 है। जो कि 0.01 पर स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि गृहणी महिलाओं के बालकों तथा अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। अतः उपरोक्त परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है'', समूह गृहणी महिलाओं और अध्यापिका महिलाओं के सन्दर्भ में अस्वीकार की जाती है। अर्थात अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य अधिक तथा गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य कम पाये गये हैं।

उक्त परिकल्पना नं0–(अ) का परीक्षण करने हेतु दूसरे स्थान पर गृहणी तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गई है जिसे सारणी नं0–02 में दर्शाया गया है।

सारणी नं0–02

गृहणी तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1 2	गृहणी समाजसेविका	50 50	43.58 32.74	10.84	4.27 3.91	13.24	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है

सारणी नं0–02 अनुसार गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 43.58 और मानक विचलन 4.27 है। तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 32.74 और मानक विचलन 3.91 है। दोनों समूहों के मध्यमान का अन्तर 10.84 है 't' value calculate करने पर मान 13.24 है जो कि 0.01 पर स्तर पर सार्थक है। अतः गृहणी महिलाओं के बालकों तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। इसलिये परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।'' समूह गृहणी–समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सन्दर्भ में असवीकार की जाती है। अर्थात गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य समाज सेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से अधिक पाये गये हैं।

परिकल्पना नं0–(अ) का परीक्षण करने हेतु तीसरे स्थान पर गृहणी तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना की गई है। जिसे सारणी नं0–03 में दर्शाया गया है।

सारणी नं0–03

गृहणी तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1	गृहणी	50	43.58	7.76	4.27	7.95	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है
2	व्यवसायी	50	35.82		5.43			

सारणी नं0–03 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 43.58 है और मानक विचलन 4.27 है। तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 35.82 और मानक विचलन 5.43 है। दोनों समूहों के मध्यमान के मध्य अन्तर 7.76 है व 't' value calculate करने पर मान 7.95 है जो 0.01 पर स्तर पर सार्थक है। अर्थात गृहणी तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।'' समूह गृहणी–व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सन्दर्भ में अस्वीकार की जाती है। अर्थात व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य गृहणी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से कम पाये गये हैं।

परिकल्पना नं0–(अ) का परीक्षण करने हेतु चौथे स्थान पर अध्यापिका तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना की गई है। जिसे सारणी नं0–04 में दर्शाया गया है।

सारणी नं0–04

अध्यापिका तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1	अध्यापिका	50	52.36	19.62	6.10	19.54	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है
2	समासेविका	50	32.74		3.91			

सारणी नं0–04 के अनुसार अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 52.36 तथा मानक विचलन 6.10 है। और समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 32.74 तथा मानक विचलन 3.91 है। दोनों समूहों के मध्यमान का अन्तर 19.62 है व 't' value calculate करने पर मान 19.54 है जो कि 0.01 पर स्तर पर सार्थक है। अर्थात अध्यापिका तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है'', समूह अध्यापिका–समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सन्दर्भ में अस्वीकार की जाती है। अर्थात अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य समाज सेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से अधिक पाये गये हैं।

परिकल्पना नं0–(अ) का परीक्षण करने हेतु पांचवे स्थान पर अध्यापिका तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना का स्पष्टीकरण सारणी नं0–5 में किया गया है।

सारणी नं0–05

अध्यापिका तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1	अध्यापिका	50	52.36	16.54	5.10	14.32	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है
2	व्यवसायी	50	35.82		5.43			

सारणी नं0–05 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 6.10 है। और व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 35.82 तथा मानक विचलन 5.43 है। दोनों समूहों के मध्यमान का अन्तर 16.54 है तथा 't' value calculate करने पर मान 14.32 है। जोकि 0.01 पर स्तर पर सार्थक है अर्थात अध्यापिका महिलाओं के बालकों तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। अतः उक्त परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है'', को समूह अध्यापिका तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सन्दर्भ में अस्वीकार किया जाता है। अर्थात अध्यापिका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से अधिक पाये गये हैं।

परिकल्पना नं0–(अ) का परीक्षण करने हेतु छटे स्थान पर समाजसेविका तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना की गई है जिसे सारणी नं0–06 में दर्शाया गया है।

सारणी नं0–06

समाजसेविका तथा व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती सारणी

क्र. सं.	महिलाओं का समूह	N	Mean	$M_1 \sim M_2$	S.D.	Calculated 't' value	0.01 सार्थकता स्तर पर 't' का मान	निष्कर्ष
1	समाजसेविका	50	32.74	3.08	3.91	3.26	2.63	0.01 स्तर पर सार्थक है
2	अध्यापिका	50	35.82		5.43			

सारणी नं0–06 के अनुसार समाजसेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 32.74 है व मानक विचलन 3.91 है और व्यवसायी महिलाओं 5.43 है। दोनों समूहों के मध्यमान के बीच अन्तर 3.08 है। तथा 't' value calculate करने पर मान 3.26 है जो कि 0.01 पर स्तर पर सार्थक है। अर्थात समाजसेविका महिलाओं के बालकों व व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। इसलिये परिकल्पना नं0–(अ) ''विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।'' समूह समाजसेविका–व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सन्दर्भ में निरस्त की जाती है। अर्थात व्यवसायी महिलाओं के बालकों के सद्धान्तिक मूल्य अधिक तथा समाज सेविका महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्य कम पाये गये हैं।

सारणी नं0–07

विभिन्न प्रकार की दैनिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं के बालकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्यमान तथा मानक विचलन को प्रदर्शित करती सारणी

क्र.सं.	महिलाओं के समूह	N	Mean	S.D.
1	गृहणी	50	43.58	4.27
2	अध्यापिका	50	52.36	6.10
3	समाजसेविका	50	32.74	3.91
4	व्यवसायी	50	35.82	5.43

निष्कर्ष–

(अ) सैद्धान्तिक मूल्य अध्यापिका महिलाओं के बालकों में सबसे अधिक, गृहणी महिलाओं के बालकों में द्वितीय स्थान पर, व्यवसायी तथा समाजसेविका महिलाओं के बालकों के क्रमशः तृतीय व चतुर्थ स्थान पर पाये गये हैं।

(ब) अध्यापिका महिलाओं की बालकों में सैद्धान्तिक मूल्य सबसे अधिक गृहणी महिलाओं की बालकों में द्वितीय स्थान पर, व्यवसायी तथा समाजसेविका महिलाओं की बालकों में क्रमश' तृतीय व चतुर्थ स्थान पर पाये गये हैं।

(स) अध्यापिका महिलाओं के बालकों में सैद्धान्तिक मूल्य सबसबे अधिक, गृहणी महिलाओं के कुल बालकों में द्वितीय स्थान पर तथा व्यवसायी एवं समाजसेविका महिलाओं के कुल बालकों में सैद्धान्तिक मूल्य क्रमशः तृतीय व चतुर्थ स्थान पर पाये गये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Afsari Begum (1971) ''प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।'' लघुशोध आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
2. Bhardwaj, R.L. Sharma, K.P. and Parashar N. (2011) ''विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर की महिलाओं और पुरूषों में प्रयोजनवाद और आदर्शवाद की मूल्य अवधारण (Journal Humanities & Social science; Interdisciplimary Approach)
3. Bhargav, Mahesh (1989), ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'' हर प्रसाद भार्गव 4/30, कचहरी घाट, आगरा।
4. Kumari Suman (1977) ''सामान्य तथा पिछड़े वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।'' (पी0एच0डी0 लघुशोध कार्य आगरा विश्वविद्यालय, आगरा)
5. Singh Sudha (1996) ''स्वीकृत, अस्वीकृत तथा उपेक्षित बालकों के मूल्यों शैक्षिक उपलब्धि और आत्माभिव्यक्ति का अध्ययन।'' (पी0एच0डी0 एजूकेशन आगरा विश्वविद्यालय आगरा)